''भारतीय पर्यटन क्षेत्र में बौद्ध स्थापत्य कला का महत्व''

निर्देशिका :
डॉ सोनल भरद्वाज
एसोसिएट प्रोफेसर
स्वामी विवेकानंद सुभारती यूनिवर्सिटी
मेरठ

जितेन्द्र मच्छिन्द्रनाथ थोरात
ललित कला विभाग
पी–एच0डी0 शोधार्थी
स्वामी विवेकानंद सुभारती यूनिवर्सिटी
मेरठ

प्रस्तावना :–

प्राचीनकाल से ही कला भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रही है। यहाँ की स्थापत्य कला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत कला और विभिन्न क्षेत्रों की लोककला जिसमें गायन, वादन और लोकनृत्य मुख्य है। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले पर्यटकों के मन को मोहित किये बिना नहीं रहती।

''भारतीय वास्तु शास्त्र एवं वास्तु–कला में स्थापत्य का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है। भोज ने अपने समशंगण सूत्रधार के ''स्थापत्य लक्षणम्'' नामक 88वें अध्याय में स्थापत्य कला का बड़ा ही मार्मिक एवं ओजस्वी चित्रण किया है।''

भारतीय पर्यटन क्षेत्र में बौद्ध धर्म के कला का अत्यन्त महत्व है। इसमें स्तम्भ, स्तूपों और चैत्य, अजन्ता और वैकुण्ठ की गुफाएँ यहाँ पर भारत से ही नहीं तो विदेशी पर्यटक यहाँ की कला का आनन्द और अनुभूति लेने आते हैं।

भारतीय वास्तुकला और स्थापत्य कला में स्तम्भ और स्तूपों का अलग ही महत्व हमें देखने को मिलता है। बुद्ध के निर्वाण के अनन्तर स्तूप और स्तमी नामक वास्तु का उदय हुआ है। बौद्ध धर्म में स्तूप को स्थापत्य में अलग ही महत्व है।

भगवान बुद्ध के विचारों का उनकी शिक्षा को पूरे भारत में विस्तार और प्रचार के लिये स्तूप बनवाये गये स्तूप में भगवान बुद्ध के निर्वाण के अवशिष्ट अभियों को तत्कालीन भारतीय शासकों ने आठ भागों में विभक्त किया और अपने–अपने अंश पर भगवान बुद्ध की स्मृति में स्तूपों का निर्माण कराया इन्हीं श्रद्धा स्मारक को बौद्ध ग्रन्थों में चैत्य कहते हैं। इन्हीं चैत्यों का वास्तुकला की दृष्टि में नाम स्तूप है।

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जी ने भारत में बौद्ध धर्म का पुनरुत्थान किया। एक सर्वेक्षण के अनुसार 1959 तक लगभग 1.5 से 2 करोड़ दलितों ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया थां 1956 से आज तक हर साल यहाँ देश और विदेशों से 20 से 25 लाख बुद्ध और नवयान के बौद्ध अनुयायी अभिवादन करने के लिए आते हैं। इस पवित्र एवं महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों से भारतीय पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा और विस्तार हो रहा है।

बौद्ध स्थापत्य कला का परिचय :–

भारतीय उपखंण्डों में स्तूप तक प्रकार का प्रार्थना स्थल है। इसका भौगोलिक और धार्मिक महत्व है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण स्तूप और स्तम्भ है। भारतीय वास्तुकला में स्तम्भ का अलग महत्व है। स्तम्भ के दो प्रकार है। धार्मिक और राजनैतिक सम्राट अशोक ने अनेक धर्मस्तम्भों को स्थापित किया था। राजनैतिक स्तम्भों में कीर्ति स्तम्भ, मीनारें आदि है। भारत में इनका पर्याप्त प्रयोग किया गया है। प्रत्येक राजा विजयी होने पर विजय की यादगार में इस तरह के स्तम्भ अवश्य प्रतिष्ठित कराना था।

''मौर्यकालीन स्तम्भ–मौर्यकालीन कला के उत्कृष्ट आदर्श के रूप में अशोक के शिला–स्तम्भ उसके शिरोभाग और पाषाण मूर्तियाँ विशेष महत्वपूर्ण है। इन स्तमीतों की विशेषता के रूप में गोलाकार बीस फुट से भी अधिक लम्बे पत्थर से निर्मित है। ये स्तम्भ नीचे मोटे तथा शीर्ष की और क्रमशः पतले होते गये है। प्रत्येक का भार 50 टन है तथा अधिकतम लम्बाई 50 फीट है। ये भारत के विभिन्न प्रान्तों, नगरों में मिलते हैं।''

''गुप्तकालीन स्तम्भ– राजनीतिक क्षेत्र में अनेक स्तम्भ स्थापित किये गये। गुप्त सम्राटों ने अनेक विजय–स्तम्भों की स्थापना करायी है। प्रयाग स्थित अशोक के प्राचीन स्तम्भ पर समुद्रगुप्त की सुन्दर प्रशस्ति हरिषेण ने उत्कीर्ण की है। इस मोह स्तम्भ को गरुड़ ध्वज कहा जाता है।

स्तूप– भगवान बुद्ध निर्वाण के अवशिष्ट अस्थियों को भारत के शासकों ने आठ भागों में विभक्त किया और बुद्ध की स्मृति में समाधि का निर्माण कराया। इन्हीं स्मारक समाधियों को बौद्ध ग्रन्थों में ''चैत्य कहते है। इन्हीं चैत्यों का वास्तुकला की दृष्टि से स्तूप नाम है। चैत्य शब्द के अनेक अर्थ है। चिताभूमि पर निर्मित वास्तु चैत्य है। दूसरा चैत्य उत्तम प्रसाद का भी नाम है, जो कि चुन–चुन कर बनाया गया हो तथा भी एक अर्थ है। सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रसार के लिये स्तूपों का निर्माण कराया उन्होने 54000 स्तूपों का निर्माण करवाया था, किन्तु आज अशोक कालीन अधिकांश स्तूप ध्वस्त हो चुके हैं। इसी प्रकार का एक तीन सौ फुट ऊँचा स्तूप काबुल पेशावन के मध्य निग्रहार में भी था।''

अशोक कालीन अवशिष्ट स्तूपों में साँची का स्तूप मुख्य है। भारत के गौरव गान के लिए यह स्तूप महत्वपूर्ण है। साँची में दो छोटे तथा एक बड़ा स्तूप है। बड़ा स्तूप अशोक अथवा उसके किसी प्रतिनिधि ने तृतीय शतक ई0पू0 में ईटों से बनवाया था। उसके प्रवेश द्वार पर विशाल तोरण है। इस तोरण पर तत्कालिन भारत की संस्कृति एवं सभ्यता की कथा को बहुत ही सजीव रूप से व्यक्त करता है।

स्तम्भ और स्तूपों का पर्यटन क्षेत्र का विकास :–

प्रमुख बौद्ध तीर्थ जो पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा देते हैं। यहाँ लाखों बौद्ध अनुयाई अभिवादन करने जाते है। जिसमें लुम्बिनी, बोधगया, सारनाथ, कुशीनगर, सांची, दीक्षाभूमि, नेचुआ जलालपुर राजगृह नालंदा बिहार, इत्यादी तीर्थ क्षेत्र जो भारतीय पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा दे रहे है।

लुम्बिनी–इसा पूर्व 563 में राजकुमार सिद्धार्थ गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था। यहाँ सम्राट अशोक का एक स्तम्भ अवशेष के रूप में इस बात की गवाही देता है कि भगवान बुद्ध का जन्म यहाँ हुआ था।

बोधगया–जहाँ बुद्ध को ज्ञान प्राप्ति हुयी जिस पीपल वृक्ष के नीचे वह बैठे, उसे बोधि वृक्ष यानी ज्ञान का वृक्ष कहा जाता है वही गया को बोधगया के नाम से जाना जाता है।

सारनाथ–सारनाथ बौद्ध धर्म का प्रधान केंद्र था यहाँ धार्मिक स्तूप है। यहाँ पर अशोक स्तम्भ है। यहाँ बौद्ध विद्वानों ने और अनुयायियों ने जीर्णोद्धार करवाया यहाँ नवीन विहार व वस्तु – संग्रहालय स्थापित हुआ है।

कुशीनगर–कुशीनगर बौद्ध अनुयायियों का बहुत बड़ा पवित्र तीर्थ स्थल है। भगवान बुद्ध कुशीनगर में ही महापरिनिर्वाण को प्राप्त हुये। कुशीनगर के समीप हिरन्यवती नदी के समीप बुद्ध ने अपनी आखिरी सांस ली। यहाँ पर भी स्तूप एक है।

सांची–यह सांची स्तूप मध्य प्रदेश में स्थित है। यहाँ छोटे बड़े अनेक स्तूप हैं। यह प्रेम, शान्ति विश्वास और साहस के प्रतीक हैं। यहाँ गुप्त कालीन पाषाण स्तम्भ भी है।

दीक्षाभूमि –नागपुर महाराष्ट्र राज्य के शहर में स्थित पवित्र एवं महत्वपूर्ण बौद्ध तीर्थ स्थल है। यह विश्व की सबसे बड़ी धार्मिक परिवर्त भूमि है।

इसी तरह भारतीय पर्यटन में बौद्ध स्थापत्य कला का अलग ही महत्व हमें देखने को मिलता है।

निष्कर्ष :–

भारत में पर्यटन सबसे बड़ा सेवा उद्योग है। यहाँ इसका राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद GDP में 6.23% और भारत के कुल रोजगार में 8.78% योगदान है। भारत में वार्षिक तौर पर 90 लाख विदेशी पर्यटक का आगमन और 96.1 करोड़ घरेलू पर्यटकों द्वारा भारत के अलग–अलग पर्यटन स्थलों में भ्रमण करते है। इसमें बौद्ध स्थापत्य कला के केंद्र का बहुत महत्वपूर्ण योगदान देखने को मिलता है। इसलिये भारतीय पर्यटन की दृष्टि से बौद्ध स्थापत्य कला का बहुत महत्वपूर्ण अंग है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

- ''भारतीय स्थापत्य'' लेखक डॉ0 विजेन्द्रनाथ शुक्ला, हिन्दी समिति सूचना विभाग, उ0प्र0 लखनऊ, पृ0सं0–8
- ''भारतीय कला के विविध आयाम'' लेखक प्रकाश नारायण नाराणी, महेश बुक डिपो, जयपुर
- प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति, डॉ0 राजकिशोर सिंह एवं श्रीमती उषा यादवय विनोद पुस्तक मन्दिरा, आगरा।